

किनामधेय (किम् + ना^०) adj. *welchen Namen führend* PAKĀT. 127, 19.

किनामन् (किम् + ना^०) adj. *dass.* VID. 267.

किनिमित्त (किम् + नि^०) adj. *welche Veranlassung habend* MĀLAV. 49,

11. किनिमित्तो गुरोः शपः सौदासस्य Bṛĥg. P. 9, 9, 19. किनिमित्तम् adv. *aus welcher Veranlassung, warum* R. 3, 23, 35, 52, 47, 5, 38, 6 (getrennt geschrieben).

किप्य m. *ein best. Wurm* Suçr. 2, 509, 15 (किप्य). — Vgl. चिप्य.

किम् (von 1. कि) 1) nom. acc. sg. n. zu 1. क s. daselbst. — 2) adv. AK.

3, 4, 52, 12. 3, 5, 5. H. 1536. an. 7, 7. MED. avj. 52. a) *wie, woher, warum:* किं न इन्द्र जिघांससि RV. 1, 170, 2. किमासाये 182, 3, 4, 5, 12. 8, 69, 5. किं नोड्डु कर्षसे दातवा उ 4, 21, 9. किमस्मभ्यं ज्ञातवेदो कृषीषे 7, 104, 14. 8, 8, 8. 21, 6. 62, 11. किमिदं वैकृतं कृतम् R. 1, 9, 45. किं ज्ञासि माम् N. 11, 3, 12, 12, 15, 17, 26, 17. BṛĥMAN. 3, 2. R. 2, 31, 7. DAÇ. 2, 6, 29. HIT. Pr. 28. 12, 20. 14, 20. 31, 21. I. 168. ÇĀk. 56, 13. 70, 22. 93, 13. VID. 66. 240. Dhūrtas. 83, 12. 86, 3. वडुलीभूतमेतत्किं न कथ्यते *warum sollte dieses, da es schon allgemein bekannt geworden ist, nicht erzählt werden?* ÇĀk. 79, 11. — b) Fragewort, *num, an:* किम् श्रेष्ठः किं पविष्टो न आ जगन्किमीयते हृत्यम् RV. 1, 161, 1. 4, 23, 6. किं मे कृष्यमहृणानो नृपेते 7, 86, 2. किं रजस एना पुरो अय्यदस्ति AV. 5, 11, 5. साम्यं सौम्येच्छसीति किम् M. 11, 195. किं मां न त्रातुमर्हसि N. 12, 13. न विभेषि किडिम्बे किं मत्कापादिप्रमोदित्वा Hip. 3, 17. किं क्वचिच्छेनो वालकं कर्तुं शक्नोति PAKĀT. 100, 21. ज्ञातिमात्रेणा किं कश्चिद्वन्यते पश्यते क्वचित् HIT. I. 51. 167. अस्मिन्निर्जने वने कदाचित्किं व्याधाः संचरन्ति 39, 4. ÇĀk. 8, 3. 23, 11. 29, 12. 61, 9. HIT. I. 72. VID. 296. BRAHMA P. in LA. 57, 2. ÇRĥGĀRAT. 14, 19, 21. कटमकार्षीः किम् । न करोमि oder नाकार्षम् P. 3, 2, 124. Sch. किं मया पकृतं तस्य यत् *habe ich ihm Etwas zu Leide gethan, dass* Viçv. 4, 4. परित्यक्ता वसिष्ठेन किमकम् — पादं राजभैरवेना द्विषेय *hat mich Vas. in Stich gelassen, da ich u. s. w.* 3. परित्यक्ता त्वयाकम् — यस्माद्वाजभद्रा मां हि नयति वत्सकाशतः 8. Wenn die Handlung in Frage gestellt wird, behält das verbum fin., wenn es von keiner praep. begleitet ist, seinen Ton nach P. 8, 1, 44. किं देवदत्तः पचति । आहो स्विदुङ्क्ते *kocht Dev. oder isst er?* Sch. In den folgenden Beispielen dagegen ist das verbum fin. unbe-tout: किं देवदत्त आदन् पचति । आहो स्विदुङ्काकम् ॥ किं देवदत्तः प्रपचति । उत प्रकरोति । ebend. — किं रज्जुः किं सर्पः *ist es ein Strick oder eine Schlange?* H. 1536. Sch. किम् — उत ÇĀk. 69. 33, 12. तन्न ज्ञाने किं पद्मो गता उत प्रवरुणेनेति Mṛāku. 147, 22. 48, 20. 49, 3. KUMĀRAS. 6, 23. SĀH. D. 38, 13. VOP. 23, 22. किमनुरक्ता विरक्ता वापि मयि स्वामीति ज्ञास्यामि HIT. 53, 18. किम् — उत वा PAKĀT. 68, 14. SĀH. D. 5, 9. किम् — उत — उत BHARTṚ. 3, 77. किम् — उत — अथ वा KATHĀS. 17, 112. किम् — उत — आहो स्वित् ÇĀk. 106. किम् — अथ वा — उत R. 5, 51, 7. किम् — किं वा ÇRĥGĀRAT. 7. किम् — किं वा — किं वा PAKĀT. 34, 15, 16. किम् — किम् — वा — अथ Mṛāku. 171, 24. Das einen Mangel, einen Tadel ausdrückende किम् am Anf. eines comp. gehört auch hierher: किं राजन् *ist das ein König?* d. i. *ein schlechter König* P. 2, 1, 64. 5, 4, 70. Auch mit einem verb. fin. verbunden: किमधीते *er liest schlecht (liest er wirklich?)* P. 8, 1, 44. Sch. — c) in Verbindung mit andern Partikeln: a) mit अङ्ग *wie doch, warum doch:* किमङ्ग वा प्रत्यवर्ति गमिष्याङ्गः RV. 3, 58, 3. 6, 44, 10. 52, 3. 10, 42, 3. AV. 6, 45, 1. 10, 7, 37. — β) mit vorang.

अथ s. unter अथ 7, c. — γ) mit अपि *sehr, gehörig, heftig:* किमपि मनसः संमोहे मे तदा बलवान्भून् ÇĀk. 183. स्तन्यस्तोशीरं शिथिलितमृणालैकवल्यं प्रियायाः साबाधं किमपि रमणीयं वपुरिदम् 37. किमपि रुदती MEGH. 110. 111. ÇĀNTIÇ. 4, 15. Glt. 1, 14. — *noch mehr:* मित्रं वरुहः प्राप्तः किमप्येष पुरोहितः *ein Freund des Var. ist gekommen, noch mehr, es ist der Oberpriester* KATHĀS. 4, 55. 2, 82. आगतावत्तिका देवि किमप्यस्मान्विधूयतु । प्रविष्टा राजपुत्रस्य गृहं गोपालकस्य सा ॥ 16, 98. किमप्यक्षिप्यस्तव चेन्मतो ऽहं यशःशरीरे भव मे दयालुः RAGH. 2, 57. — δ) mit इति s. unter 1. इति 5. — ε) mit उ und उत s. unter 2. उ 3, c und 7 und unter 2. उत 3 und 5. Zu der Bed. *wie viel mehr oder weniger, ja sogar* haben wir aus der älteren Literatur folgende Beispiele nachzutragen: (अस्मि) अग्निं दा किमु त्रयः करति RV. 10, 48, 7. किमाडुतासि वृत्रकृन्त्युमतमः 4, 30, 7. किमु त्वावान्मुष्कयोर्वद्ध आसते 10, 38, 5. ÇAT. Bā. 1, 1, 4, 8. किमुत वरेरन् 13, 5, 5. 5. किम्वेतावन्मात्रमुपजानीत 1, 6, 4, 4. किमुत — किमुत *utrum — an* H. 1536. Sch. — ζ) mit किल als Ausdruck des Unwillens (nach SIDDH. K.) P. 3, 3, 151. न संभावयामि न मर्यायामि तत्रभवान्किं किल वृषलं पाजयिष्यति Sch. VOP. 23, 12. — η) mit च und noch, *ferner, weiter:* नाम्ना वरुहः किं च कात्यायन इति श्रुतः KATHĀS. 2, 1. भगव मे सुतो किं च गृहाणापरन्पुरम् 23, 205. कालनेमिरपि क्रमात् । मद्याधेनो ऽभूत्किं चास्य दिनैः पुत्रो ऽप्यजायत ॥ 10, 13, 1, 33. 14, 67. PAKĀT. 226, 11. HIT. 24, 4, v. I. SĀH. D. 4, 1. Mit den Worten किं च fordert ein ungeduldig Zuhörender den Sprechenden auf, seine Erzählung schneller zu Ende zu führen ÇĀk. 126. 89, 17. Dient häufig zur Verknüpfung zweier, in die Prosa eingestreuter Sprüche in gebundener Rede und verwandten Inhalts, HIT. 4, 18. 6, 5. 12, 8. Mit किं च (ein verstärktes च, welches nicht voranstehen kann) wechseln: तथा च, अपि च, अन्यच्च, अपरं च. Nach den Lexicogr. steht किं च साकल्ये und आरम्भे H. an. 7, 19. MED. avj. 14. — θ) mit च न (चन) *auch nicht* (verstärkend) *irgendwie, aufkeine Weise:* न हि शक्यामि किं च न । परित्यक्तमहं बन्धुं स्वयं जीवन्मृशंसवत् ॥ MBh. 1, 6132. — *etwas, ein wenig* H. 1536. उपाध्यायमथभ्यर्च्य तया किंचन दीनया । क्रमेण शितितश्चाहं लिपिं गणितमेव च ॥ KATHĀS. 6, 32. — ι) mit चिद् *etwas, ein wenig* AK. 3, 5, 8. H. 1536. किंचिद्वाङ्मुखः DRAUP. 9, 24. Viçv. 7, 7, 15. किंचित्कोपसमन्वितः N. 19, 14. किंचिदामीलितितपाः R. 3, 22, 18, 17. किंचिद्वत् Mṛāku. 127, 2. VID. 23. किंचिद्विरुष्य RAGH. 2, 46. ÇĀk. 17, 8. 81, 17, 141. MEGH. 16, 42. H. 297. Mit nachfolgendem इति ÇĀk. 12, 17. RAGH. 12, 21. — x) mit तर्हि *sondern (urspr. wie denn?):* नायमनुकर्षणार्थश्चकारः । किं तर्ह्येवमनेन विधीयते PAT. zu P. 2, 2, 4. पौत्रप्रभृतिवचनं न सामानाधिकरण्येनापत्यं विशेषयति । किं तर्हि यद्या विपरिणाम्यते KĀÇ. zu P. 4, 1, 163. — λ) mit तु *aber, jedoch, nichtsdestoweniger;* verhält sich zu dem einfachen तु wie किं च zu च. कामं च मम न न्याय्यं प्रष्टुं त्वा कार्यमीदृशम् । किं तु कार्यगरीयस्वातन्त्र्यस्वाकम्चुदम् ॥ MBh. 1, 1916. नीतिस्तावदीदृश्येव । किं त्वमस्मदाश्रितानां दुःखं सौहृदं सर्वथासमर्थः HIT. 13, 18. लब्धावकाशो मे मनोरथः । किं तु सध्याः परिरुहोदाहृतं वरप्रार्थनां श्रुत्वा धृतद्विधीभावकातरं मे मनः ÇĀk. 15, 10. MBh. 3, 314. R. 2, 31, 2. 3, 19, 12. 4, 6, 19. 9, 102. PAKĀT. 74, 11. 164, 12. 167, 5. 201, 8. HIT. 10, 11. 27, 17. 86, 4. RAGH. 1, 65. KATHĀS. 4, 33. 13, 162. BRAHMA-P. in LA. 51, 6. Dhūrtas. 76, 6. PRAB. 89, 4. VET. 29, 15. किं तु तथापि HIT. 11, 6. परं किं तु